STEPPING STONE SCHOOL (HIGH)

CLASS: IX

Worksheet - X

Subject: Hindi **Date: 07-05-2020**

Topic: **Time Limit: 40 mins**

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पायँ।

बलिहारी गुरु आपनो, जिन गोविंद दियौ बताय॥

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहि।

प्रेम गली अति साँकरी, तामे दो न समाहि॥

काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई बनाय।

ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय॥

पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहार।

ताते ये चाकी भली, पीस खाय संसार॥

सात समंद की मसि करौं, लेखनि सब बरनाय।

सब धरती कागद करौं, हरि गुन लिखा न जाय।।

पद्य (साहित्य सागर) Date: 07/05/20

पाठ-1 साखी

(कबीर दास)

1. "गुरु गोविंद दोऊ .... दियो बताय ||"

व्याख्या :- प्रस्तुत दोहा कबीर दास जी द्वारा रचित 'साखी' से लिया गया है। प्रस्तुत दोहे में कबीर ने गुरु को ज्ञान प्राप्ति का साधन माना है।

कबीर दास जी कहते हैं कि गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊँचा होता है। वे कहते हैं कि यदि हमारे सम्मुख गुरु और गोविंद (ईश्वर) दोनों ही खड़े हों तो हमें पहले अपने गुरु के ही चरण स्पर्श करने चाहिए। क्योंकि उनकी कृपा से ही हमें ईश्वर के बारे में जानने का सौभाग्य प्राप्त होता है और गुरु ही हमें ईश्वर प्राप्ति का मार्ग दिखाते हैं।

2. "जब मैं था .... दो न समाहि ||"

व्याख्या :- प्रस्तुत दोहे में कबीर दास जी कहते हैं कि जब तक हमारे अंदर अहंकार होता है तब तक हमें परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती।

कबीर दास जी कहते हैं कि जब तक हमारे अंदर अहंकार अर्थात् बुराई का वास होता है तब तक हम ईश्वर को नहीं पा सकते और जब हमारे मन से अहंकार हट जाता है तब वहाँ ईश्वर अर्थात् अच्छाई का वास हो जाता है क्योंकि हमारी प्रेम रूपी गली इतनी सँकरी होती है कि उसमें अहंकार और ईश्वर दोनों एक साथ नहीं रह सकते। अतः हमें अहंकार का त्याग कर देना चाहिए।

SUB: HINDI

पद्य (साहित्य सागर)

पाठ - 1 साखी (कबीर दास)

3. "काँकर पाथर जोरि ..... हुआ खुदाय ॥"

व्याख्या :- प्रस्तुत पंक्तियों में कबीर दास जी ने मुसलमान समाज में व्याप्त धार्मिक आडंबरों पर व्यंग्य किया है।

कबीर दास जी कहते हैं कि मुसलमानों ने कंकड़, पत्थर जोड़ के मस्जिद बना लिया है और उस पर चढ़ कर मुल्ला जोर-जोर से चिल्लाते हैं जैसे उनका खुदा बहरा हो गया हो। कबीर दास जी का मानना है कि सच्चे हृदय और शांत मन से करनी चाहिए।

4. "पाहन पूजे हरि ..... खाय संसार ॥"

व्याख्या :- प्रस्तुत पंक्तियों में कबीरदास ने हिंदुओं के द्वारा की जाने वाली मूर्ति पूजा तथा बाहरी आडंबरों का विरोध किया है।

कबीर दास जी कहते हैं कि यदि पत्थर की पूजा करने से ईश्वर की प्राप्ति होती है तो फिर मैं तो पहाड़ की ही पूजा करूँगा। अर्थात् उस पत्थर से अच्छी तो पत्थर की चक्की होती है जिसके द्वारा पीसा हुआ अनाज खाकर मनुष्य का भला होता है।

5. "सात समंद की ..... लिखा न जाय ॥"

व्याख्या :- प्रस्तुत पंक्तियों द्वारा कबीर दास जी कहते हैं कि गुरु की महिमा का वर्णन लिखकर नहीं किया जा सकता।

कबीर दास जी कहते हैं कि भले ही सातों समुद्रों की स्याही बना लिया जाए, वनों को कलम बना लिया जाए तथा समस्त धरती को कागज़ बना लिया जाए तो भी गुरु की विशालता का वर्णन नहीं किया जा सकता। अतः कबीर दास का मानना है कि गुरु या ईश्वर सद्गुणों की खान हैं इसलिए उनके असीम गुणों का वर्णन शब्दों में कर पाना असंभव है।